बी०ए० भाग II

द्वितीय प्रश्न-पत्र

प्रश्न- आदिकाल के नामकरण की समस्या पर विचार कीजिए।

उत्तर- आदिकाल के विभिन्न

हिन्दी साहित्य का आरम्भिक काल जिसे विद्वानों ने आदिकाल, वीरगाथाकाल, चारणकाल रासोकाल, अपभ्रंशकाल आदि अनेक नामों से सम्बोधित किया है यह हिन्दी का सर्वाधिक विवादग्रस्त काल है। इस विषय में विद्वानों के विचार अपेक्षित है —

१. मिश्र बन्धुओं एवं आचार्य शुक्ल के मत -

सर्वप्रथम मिश्र-बन्धुओं ने इसपर विचार किया है। तथा आदिकाल नाम से अभिहित किया। तदुपरान्त वीर-गाथाओं की प्रधानता देखकर आचार्य शुक्ल ने इसे वीरगाथाकाल नाम से अभिहित किया।

शुक्ल जी ने इस नामकरण के सन्दर्भ में तीन बातें विशेष उल्लेखनीय है :—

(क) उन्होंने इस काल में वीरगाथात्मक रचनाओं की प्रधानता मानी है।

(ख) नाथपन्थी योगियों व सिद्धों की कृतियों को उन्होंने शुद्ध साहित्य में स्थान नहीं दिया।

(ग) जैनों द्वारा रचित साहित्य को धार्मिक साहित्य कहकर उसे रचनात्मक साहित्य की सीमा से निकाल दिया।

1- आचार्य शुक्ल के मत की समीक्षा -

शुक्ल जी के अनुसार इस युग में दो प्रकार की रचनाएँ उपलब्ध होती हैं। प्रथम - अपभ्रंश की दूसरा देश की भाषा। अपभ्रंश में केवल चार रचनाएँ उपलब्ध हैं —

① विजयपाल रासो
② हम्मीर रासो
③ कीर्तिपताका
④ कीर्तिलता

लेकिन जिन रचनाओं के आधार पर शुक्ल जी ने इसे वीरगाथाकाल नाम दिया उन कृतियों की प्रमाणिकता में इनके द्वारा प्रतिपादित नामकरण भी वास्तविकता से परे प्रतीत होता है।

2. डॉ०रामकुमार वर्मा का अभिमत -

शुक्ल जी के इस साक्ष्य पर वीरगाथाओं के प्रणेता राज्याश्रित चारण थे। अतः इस युग को चारणकाल कहना उचित है। लेकिन डॉ वर्मा के मत का डॉ० गणपति चन्द्रगुप्त ने खण्डन किया है। इसे रासोकाल कहना

भी ~~अ~~ उपयुक्त नहीं है।

3- महावीर प्र० द्विवेदी का मत -

इन्होंने इसे बीजवपन काल कहा है। लेकिन यह नाम भी उचित नहीं है, क्योंकि इस काल में अपने पूर्ववर्ती साहित्य की प्रायः सभी काव्य रूढ़ियों का सफल निर्वाह हुआ है।

4- राहुल सांस्कृत्यायन का मत -

सांस्कृत्यायन जी ने इस काल को सिद्ध-सामन्त काल कहा है। लेकिन ध्यातव्य है कि इस काल विशेष में सिद्धों के अतिरिक्त जैन कवियों ने भी महत्वपूर्ण रचनाएँ प्रस्तुत की हैं।

5- डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी का मत -

इस काल के नामकरण के सम्बन्ध में द्विवेदी का मत सर्वथा समीचीन प्रतीत होता है। उन्होंने मिश्र-बन्धुओं द्वारा रखा गया नाम भी 'आदिकाल' ही स्वीकार किया है। हिन्दी साहित्य का आदिकाल तथा 'हिन्दी साहित्य' नामक अपनी दोनों कृतियों में वे इसे आदिकाल ही स्वीकार करते हैं।

यह काल बहुत ही अधिक परम्परा-प्रेमी, रूढ़िग्रस्त, सजग और सचेत कवियों का काल है।

निष्कर्ष-

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि आलोच्य काल के नामकरण के सम्बन्ध में पर्याप्त मतान्तर है। किसी एक सर्वमान्य नामकरण के लिए पर्याप्त अनुसन्धान अपेक्षित है किन्तु जबतक किसी सन्तोषजनक नाम पर ~~क~~ न पहुँचा जाए तो तब तक के लिए आदिकाल नाम ही मेरी दृष्टि से उचित प्रतीत होता है।

17|09|2020